काले जंगल

गोपाल प्रकाशन
हाकमो की पोल, बनियाबाड़ा,
जोधपुर - 342 001
☎ 625080

काले जंगल

अशोक जोशी 'क्रात'

	अशोक जोशी क्रान्त
प्रकाशक	गोपाल प्रकाशन हाकमों का पाल बनियावाड़ा जोधपुर 342001
संस्करण	प्रथम 1999
मूल्य	एक सौ बीस रुपिया
आवरण	विनायक भारती
टाईप सेटिंग	श्री एम कम्प्यूटर सेन्टर आनारी गेट जोधपुर
मुद्रक	भण्डारी ऑफसेट जोधपुर

KALE JUNGLE (Hindi Poetry) BY ASHOK JOSHI KRANT Rs 120 00

सादर समर्पित

मामाजी

स्व श्री किशनलाल लोढा

को

जिनकी आशीष

रोशन करती रही

पगडडी मेरी

घने बीहड़ मे भी

ठेस की बूदो का असर

दिल मेरा
निर्मित
निम्नकोटि के
कच्चे धातु से
जिस पर
अतिशीघ्र
लगता ज़ग
ठेस की बूदो का

काव्याजलि से
उलीचता
मे
उसी ज़ग लगे पानी को

— 'क्रात'

सहेज

हिन्दी कविता आज जिस काले जगल से गुजर रही है उसे दखते हुए एक भय सा लगता है। वैसे कई आलोचक कविता के काल कलवित होने की घोषणा कर चुके हैं और उन्हें अब इस दम तोडती सदी में कविता का कोई भविष्य नजर नहीं आता लेकिन एक प्रश्न हमारे सामने अभी भी खडा है कि क्या सचमुच कविता की प्रासगिकता समाप्त हो गई है ?

माना कि कविता ने छन्द और तुक तोड कर एक बहुत बडा शास्त्रीय अनुशासन तोडा है फिर भी क्या कविता जिन्दा नही रही ? मुझे तो लगता है कि इसके विपरीत वह एक सशक्त हथियार बन कर सामने आई है। आदमी ने अपने आपको एक नए अन्दाज से नए रूप में पहचाना। कविता का स्वरूप बदलते परिवेश के साथ बदला जरूर लेकिन नई कविता का समझे बिना जिन लोगों ने महज इसे टूटा हुआ गद्य बना दिया उन्होंने जरूर निराश किया।

इस बात में कोई सन्देह नही कि कविता का कवितापन कभी समाप्त नहीं हुआ और न कभी होगा। *नई भावाभिव्यक्ति की तलाश में छन्द अस्त व्यस्त हुआ कुछ अपमानित भी हुआ लेकिन* उसे अपदस्थ करना सर्वथा नामुमकिन है।

काव्य की अपनी भाषा होती है अपने शब्द होते हैं और अपना आन्तरिक लय होती है। इनके अभाव में रची गई रचना और कुछ भले ही हो लेकिन कविता नही होती।

कविता के कथ्य को लेकर जो सबसे बडा परिवर्तन आया वह यह है कि अब कविता में कल्पनाओं की उडान का अवकाश कम बचा है। अब कविता केवल भावुकता की नही बौद्धिकता की भी माग करती है। इससे कविता का कुछ अहित भी हुआ है। वह लोकप्रियता के शिखर से उतर कर एक सीमित पाठक वर्ग के दायरे में आ गइ। वह गूढ परिस्थितियों का उद्घाटन करने

लगी है और शब्दों को नए अर्थ दने लगी है। अत उसने नए प्रतीक भी खोज लिए है। अत उसका दर्जा अब मन बहलाव से ऊचा उठ गया है।

आज की कविता के मम एव शब्द की शक्ति का पहचान बिना ही कविता लिखने वाला की भीड ने ही सम्भवत आज कविता का काल जगल में धकेल दिया है। उसे काल जगल से खाच कर बाहर लाने के लिए जुटे नामों म अपना नाम लिखवाने की उत्कण्ठा लिए ही अशोक जोशी क्रात का यह प्रथम काव्य सग्रह काले जगल पाठकों के सामने पहुचना चाहता है।

क्रात की अनुभूतिया एक ईमानदार हृदय एव मस्तिष्क की अनुभूतिया हैं जिन्हें उन्होंने उतनी ही ईमानदारी के साथ कागजों पर उकेरा है। उनकी कविताओं में उनका परिवेश बोलता है। माटी की सुगन्ध बिखेरता उनकी सहज अभिव्यक्तिया मस्तिष्क को झकृत कर देती है।

काले जगल में छोटी छोटी कटीली झाडिया हैं तो लम्बे वीरान रास्ते और फैलती परछाइया भी हैं। जीवन एव मृत्यु का सघर्ष भी है तो जिजीविषा का चरमोत्कर्ष भी। कोढ में खाज भी है तो जर्जर पत्तों के खापट पर पसरती धूप भी।

मैं क्रात की कविता के अश देकर कविता के मर्म को खण्डित नही करना चाहता लेकिन उसके इस नीलकण्ठी प्रयास को सराहे बिना भी नहा रह सकता। इसलिए उसकी रचना प्रक्रिया के बारे में इस सग्रह में सगृहीत एक कविता का यहा प्रस्तुत करने का लाभ भी सवरण नही कर पा रहा हू —

जीवन के समदर म
एहसास की नौकाओ को बाध
जोडता
जीवट सघर्ष
और
जूझता
सहलाता
दु ख
सताप

महसूसता
असतोष
अभाव
वेदना
सवेदना की मथनी

सहेज

हिन्दी कविता आज जिस काले जगल से गुजर रही है उस दखते हुए एक भय मा लगता हे। वैसे कई आलोचक कविता के काल कलवित होन की घोषणा कर चुके हैं और उन्हें अब इस दम तोडती सदी में कविता का कोई भविष्य नजर नही आता लेकिन एक प्रश्न हमारे सामन अभी भी खडा है कि क्या सचमुच कविता की प्रासगिकता समाप्त हो गइ है ?

माना कि कविता ने छन्द और तुक ताड कर एक बहुत बडा शास्त्रीय अनुशासन तोडा है फिर भी क्या कविता जिन्दा नही रही ? मुझ तो लगता है कि इसके विपरीत वह एक सशक्त हथियार बन कर सामने आई है। आदमी न अपन आपको एक नए अन्दाज स नए रूप में पहचाना। कविता का स्वरूप बदलते परिवेश के साथ बदला जरूर लेकिन नई कविता को समझ बिना जिन लोगों न महज इसे टूटा हुआ गद्य बना दिया उन्होंने जरूर निराश किया।

इस बात में कोई सन्देह नही कि कविता का कवितापन कभी समाप्त नही हुआ और न कभी होगा। नई भावाभिव्यक्ति की तलाश म छन्द अस्त व्यस्त हुआ कुछ अपमानित भी हुआ लेकिन उस अपदस्थ करना सर्वथा नामुमकिन है।

काव्य की अपनी भाषा होती है अपने शब्द होते है और अपनी आन्तरिक लय हाती है। इनके अभाव में रची गई रचना और कुछ भले ही हा लेकिन कविता नही होती।

कविता के कथ्य को लकर जो सबसे बडा परिवर्तन आया वह यह है कि अब कविता में कल्पनाओं की उडान का अवकाश कम बचा है। अब कविता केवल भावुकता की नही बौद्धिकता की भी माग करती हे। इससे कविता का कुछ अहित भी हुआ है। वह लोकप्रियता के शिखर से उतर कर एक सीमित पाठक वर्ग के दायरे में आ गई। वह गूढ परिस्थितियों का उद्‌घाटन करने

लगी है और शब्दों का नए अर्थ देने लगी है । अत उसने नए प्रतीक भी खोज लिए है । अत उसका दजा अब मन बहलाव से ऊचा उठ गया है ।

आज की कविता के मर्म एव शब्द की शक्ति का पहचाने बिना ही कविता लिखने वाला की भीड ने ही सम्भवत आज कविता का काले जगल में धकेल दिया है । उस काले जगल मे खीच कर बाहर लाने क लिए जुट नामों म अपना नाम लिखवान की उत्कण्ठा लिए हा अशोक जोशी क्रात का यह प्रथम काव्य सग्रह काले जगल पाठका के सामने पहुचना चाहता है ।

क्रात की अनुभूतिया एक ईमानदार हृदय एव मस्तिष्क की अनुभूतिया ह जिन्हें उन्हान इतनी ही ईमानदारी के साथ कागजा पर उकेरा है । उनकी कविताओं में उनका परिवेश बालता है । माटी की सुगन्ध बिखेरती उनकी सहज अभिव्यक्तिया मस्तिष्क का झकृत कर देती हैं ।

काले जगल में छोटी छाटी कटीली झाडिया है तो लम्बे वीरान रास्ते और फैलती परछाइया भी हैं । जीवन एव मृत्यु का सघर्ष भी है तो जिजीविषा का चरमोत्कर्ष भी । कोढ में खाज भी है तो जर्जर पत्तों के खापट पर पसरती धूप भा ।

मैं क्रात की कविता के अश देकर कविता के मर्म को खण्डित नही करना चाहता लेकिन उसके इस नीलकण्ठी प्रयास को सराहे बिना भी नही रह सकता । इसलिए उसकी रचना प्रक्रिया के बारे में इस सग्रह में सगृहीत एक कविता को यहा प्रस्तुत करने का लोभ भी सवरण नही कर पा रहा हू —

जीवन के समदर म
एहसास की नौकाओ को बाध
जोडता
जीवट सघर्ष
और
जूझता
सहलाता
दु ख
सताप

महसूसता

करती मथन
इन्ही मे से
निकलता
भावो का फेन
जिन्हे शब्दो की
छोटी छोटी अगुलियो से
सहेज कर रखता
अपने अतस्पट पर

धीरे-धीरे उगलती
मेरी कलम

तब
नील अक्स के रूप मे
जन्म लेती मेरी कविता

(मेरी कलम नीलकण्ठ)

मुझे विश्वास है कि हिन्दी का पाठक वर्ग इस समह का स्वागत करेगा। मैं क्रात के कवि को साधुवाद देता हू और कामना करता हू कि वह हिन्दी साहित्य को और भी श्रेष्ठ रचनाओं स समृद्ध करेगा।

जोशियो की खटकल जोधपुर
नवरात्रि वि स २०५५
२१-०९-९८

(सत्येन जोशी)

अनुक्रमणिका

मेरी कलम नीलकण्ठ

□

काले जंगल

पेट

गेलार्ड
अतड़ियो के जाल में
उलझा टोस्ट
चाहता
तरी

भूख

सूअर के लिए गट्टर
मछली के लिए पानी
उनके लिए शोक
मेरे लिए
राख को
तरसता चूल्हा
आग - सा तपता
प्रश्न

रोमांस

रोने का नाटक
मांसल मंच पर
क्षणिक सुख
के लिए

भोग

पागल कुत्ते की लार
यौवन के पानी पर
लाल-पीला झपका
आखों मे उतारता
हाईड्रोफोवियाई
वासना के डोरे

अकाल

ज़िन्दगी की
जिजीविषा का
चरमोत्कर्ष
कोढ़ में खाज

फेमिन

खड्डा खोदते हाथ
खोद रहे
अपने-अपने
पेट के कुए
शाम को
फ़कत
पानी पीने के लिए

धूप - १

ओस का मथ दती
पत्तो को मोह लेती
कुहरे को छाट देती
पर
न जाने क्यो
पसर जाती
जर्जर पत्ता के खापट पर
धूप ?

धूप - २

इस छोर से
उस छोर तक
अब तक
पसरी पड़ी
आंचल फैलाये
जांघो को सेकती
रूख की छांव म
न जाने कब
करवट लेगी
अपना आलस्य
मरोड़ कर
धूप

दिन

रात के कार्बन पेपर पर
कोरा सफेद
एक कागज
जिस पर
फुदकते
टकण के शब्द
जन्म और मृत्यु को
पाटते
पद चिह्न
सुख और दु ख के
घिसते
कटते
फटते
कम होते
दिन

त्यौहार

जीवन की
जिजीविषा को
मुस्कान देने का
सम्बल
एक
बहाना

हाट

हाट म
सजी-सवरी
दुकान
बिकन को
अर्थ के अर्थ मे
होकर भी अर्थहीन
जेसे हो
जीवन
मृत्यु की
दहलीज पर

खार

हथेलियो मे
नमक बाटने से
नही पनपता
खार
पसरता
स्वार्थ की परात मे
धीरे-धीरे
जमने लगता
धमनिया म
रक्तचाप के
साथ साथ
घटता-बढ़ता
जाता
खार

सयोग

सयोग का चाहे ना
हो सहयोग
फिर भी देते रहे
हम प्रेम-भोग
ताकि बीते पलो को
न हो कोई रोग
क्षणभगुर जीवन का
होता रहे सदुपयोग

मूल सूत्र

पी जाता है जो
सर्वस्व
कड़वे घूंट
पा जाता है वह
अपनत्व का
मूल सूत्र

चश्मा

आखा की आख
दो
आर
दो चार
आखो वाले
अधे
क्या समझे
उनके धधे

सस्कार

मा के हाथो से वनाया
अचार
जिसम
जूठे चमचो स
फलने लगी है
फफूदी
आर
आने लगी हे
बास

सविधान

सयुक्त है
विधान जिसका
एक जेब में पैसा
एक जेब मे सत्ता
यानी इक्के पे इक्का

चित - पट

घड़ी मे तोला
घडी मे माशा
ज़िन्दगी और मात
खेल
चित - पट का

ज़िन्दगी

वद मुट्ठी में रेत
कसने पर
हथेली की लकीरो से
लड़ती जाएगी
मुक्त होने पर
फिसल जाएगी
ज़िन्दगी

काले जगल

छतो से गायब
हो गए
गमले गुलाब के
आर
उग आए
काले जगल
एन्टीना के काले पाइप
आर काले तार के
सहारे
स्टार की टहनिया
उगलती
नगे केक्टस

अमानगी

अमानगी

रोज सवेरे आती
अमानगी पर
आठ घटे की
मजदूरन
आग सकती
लोहा पीटती
हण्डपम्प से
पानी का टेक भरती
चकरा चलाती
अमली

लहगे का कछोटा बाधे
गर्म लोहे को पीटती
लाल-लाल हो जाती
ऐसे म

सोचती अमली
काश !
इस हथौड़े ने
कुछ तोड़ा होता
भीतर तक

ओढ़ने का बना
कमरबन्द
जब वो आठों घण्टो में
चौबीसों बार
हैण्डपम्प चलाती
चोटी से ऐड़ी तक
चूल-चूल हिल जाती
पानी का टैंक
भरते-भरते
कभी-कभी
सोचती अमली
क्यों न भरपाई
उसकी जिन्दगी
फकत अम्बे की
कमाई से

चूड़े को ऊंचा
सरका कर बांधती
दोनों कोहनियों पर
मटमैला चिथडा
अर्द्धखड़ी स्थिति में
जब चलाती
गोल बडा चकरा
उसकी रीढ़ की हड्डी
दुहरा कर ऐंठ जाती
ऐसे मे
सोचती अमली

क्या नहीं
चल पाता
ज़िन्दगी का गाडा
एक चक्रे पर
कुम्हार के चाक
की तरह

फुकनी के मुह से
चिनगारिया म
उड़ते देखा उसने
अपने सपनो को
शुरु-शुरु मे उसको
वहम हुआ
चिनगारिया से सपनो का
पर अब
समझने लगी ह महत्त्व
फुकनी म भरी
हवा के घनत्व का
तब से अब तक
रोज सवेरे आती
अमली अमानगी पर

कपडे उसके क्लात
त्रस्त ह उसके
हर पेवद का सताप
सावली सूरत पर
पसीने के
खारे पानी की
सफेद फूलण
उसके हाथा के
छालो से भी महगी

जन

आग सरक्ती
लाहा पीटती
हण्डपम्प स
पानी भरती
चकरा चलाती
तन
खण खण ग़जता
चमक्ता
अमली का चूड़ा
धवला धवला धवला

□

एक और तोडती पत्थर

एक छाती से
चिपका
चूस रहा
दूसरा रोटी से जुडा
झोली मे झूल रहा
तीसरा एक
पेट के तल मे
उग रहा
वह
एक आर तोडती पत्थर
रल की पटरियो के पास
उस छोर पर
ये
चूसते
झूलते
उगते
देते
उस छाव
वास
जीवन कर्म को
आधार

खोज

घर से निकला हसिया
रोटी की खोज मे
वह उसे ढूढ़ती
रोटी के लिए
रोटी को खोज हे
एक ऐसे फ्रिज़ की
जिसमे वह कंद होकर
मिल्क फूड मे
ढल जाये
तब
लोग उसे
दाता से नही
जीभ से चबाए

घर स निकला हसिया
रोटी की खाज म
सवेरे से शाम तक
खोजता रोटी
आजकल
रात को भी
खोजता रोटी

एक रात उसने
चुपके से
चोरी से
पूर्णिमा का चांद
देखा हंसिये की ओट से
तब से
उछलता-कूदता
चिल्लाता
मिल गई
चांद-सी
गोल-मटोल रोटी
लेकिन जब
देखता
अपने आपको
अर्द्धवृत्त-सा
ऐंठा हुआ
मायूस-सा
बुदबुदाता
आधी ही मिली
आधी ही....मिली



बजट

वेतन का दिन
ओर
घर का बजट
पत्नी की
मुस्तदी से
पेसे खडे होकर
अपनी-अपनी
मद की गुफाओ म
घुस जाते
लेकिन कुछ मुद्दे
अभी भी
अधूर छूट जाते
उनमे होते
सुमन का दुपट्टा
हरी सब्जिया की जात

मा के गिरवी पड़े
काना के ग़ाले
बहिन के जापे का
परचून
दादा के चश्मे का
काच
लेकिन इन सबसे
आवश्यक होता दूध
लल्लू का
तब झल्ला कर
उससे कहता
तुम
अर्थहीन हो
तुम्हारे आचल का
दूध ही नही
सूख गया
वात्सल्य भी



वे

वे
थप्पड़ मार कर
लाल रखते गाल
अपने पेट के कट्टे को
पीठ पर लादे रखते
एक चेहरे पर
कई चेहरे
मढ़ाये रखते
पर
हर चेहरे पर
दो समतल
गाल होते
जिनके बीच नही होती
नाक
नहीं होती

कोई विभाजन रेखा
गालो के बीच

दोनो गालो का
पृथक-पृथक कार्यक्षेत्र
एक बिस्तर पर
सम्भोग के गिलाफ़ के लिए
दूसरा
बहियो मे
योग-दर-योग
उनके छप्पन भोग के
लिए
हाशियो मे भी
हसने के लिए
तिल-तिल
जीने को
तेल की माफिक
बहता
आदमी
वे आदमी
जिनके होते
दो समतल गाल
लेकिन
नही होती नाक

□

पिण्डदान

'अ' ने जब
आर्थिक हाथ
झटक दिए
तब
'ब' ने किया
पिता का पिण्डदान
'अ' यह मान कर
कि
वह तो
पिण्डदान नही
पूजा थी
गगा-जल से
गगा की
पूछ रहा 'ब' स
इन्श्योरस का
हिसाब
कितना
निर्लज्ज
बेशर्म
कुटिल हे 'अ
आर
ब'— ?

काला सूरज

तुम अपनी
नन्हीं-नन्ही आखा से
नहीं देख पाओगे
वह
काला सूरज
जो रोज आधी रात
पीछे पहाड़ा के
निकलता
नित
सजाता
महफिल
इन झुरमुटो म
उल्लुआ की
आर
देता
ताप
अधापन
बेहोशी
उफनता लावा
नशीली बोतलो में
डूब जाता
कटीली गलियो मे
जिन पर
रोएँ
नुकीले खुरट
ओर
जिनकी जडो मे
चमजुओ का वास

चलता पुर्जा

सवेरे का सूरज
रोज मेरे आगन मे
छोड़ जाता
एक अभाव का प्रश्न
मै
उसके प्रत्युत्तर मे
घुटन भरी
गुफा मे
भटकता जाता
जहा ज्योतिर्गमय की
कोई राह नही
अमृतगमय की
परवाह नही
दिन के उजाले मे भी
यह प्रश्न
मेरे अतस्तल तक
फैला देता
घना अधकार
उस पर भी
कभी-कभी

आत्म पटल के
प्रतिविम्ब पर
घटियो का कम्पन
सुनता
महसूसता
लेकिन धीरे-धीरे
अब ऐसी
घटियो का कम्पन
सुनना वद हो गया
अब तो
उस गहन गुफा मे
ग्रसित अधकार से
मे
धीरे-धीरे
मूढ हो गया
इसी तरह
तीव्र गति से
चलने वाला
गिरगिट की तरह
रग बदलने वाला
जेसी महसूसता
हवा
वेसा ओढ लेता मुखौटा
ओर अन्तत
वना गया
एक चलता पुर्ज़ा

□

लक्ष्य

अखबार
बोला
अफसोस।
परिवार कल्याण विभाग
इस वर्ष भी
लक्ष्य
पूरा नही
कर पाया

आतकवादियो ने
कहलवाया
हमने हजारो को
मौत के घाट उतार कर
परिवार कल्याण विभाग का
लक्ष्य
पूरा
कर डाला

प्रशासन

प्रशासन
व्यवस्था की
खुरदरी
जर्जर इमारत
जिसमे आवाज
भटकती
टेलीफोनिक
दिल धडकते
फाईलें चलती
सरकती
योजनाए
आर
पकते दूर
जिनसे
फूलती जेबे
इन्ही ईटा के नीचे
दब गई
लाशें
कि
जिनको
सास देने के लिए
कुछ कागजो की
फडफडाहट
जन्म देती
फिर
नई एक योजना को
थोप कर
जाच आयोग

एटम का टुकडा

हडबड़ाते हुए
दबाते
टटोलते
चाकस निगाहो से
चारो तरफ देखते
और यकायक
मेज़ पर छोड जाते
लावारिस वस्तु
जिसको हल्के हाथो से उठाते
बुदबुदाते
क्या करे
चलता नही
चलाने के लिए
यह सब काला-पीला
करना ह पडता
मन नही मानता
फिर भी रख देते
आत्मा के नीचे
छोटा-सा
एटम का टुकड़ा
जिसका नाम
होता रिश्वत

सतायी हुई फाईल

पेपरवेट के
आलिंगन मे
बॉस के सुनहरे
हस्ताक्षर क
सिगार से
सजी हुई
मेज़ रूपी पलग पर
कूलर की ठडी
हवा मे
पेपर रूपी
नई नवेली दुल्हन
खुश होकर
मचलती
लेकिन
दूसरे ही क्षण

वह फाईल के
शिकजे म
फस जाती
ज्यू
नई सुहागन
सुहागरात के बाद
धीरे-धीरे
दहेज के तानो से
सताई जाती
तडफती
फड़फडाती
सिसकती
जब
पेपर पर
पेपरवेट का नही
स्वय उसकी जाति का
अत्याचार
बढने
लगता

□

हडताल

प्रथम दृश्य
हठ हैं
हाथो का
श्रम का
पेट का

दूसरा परिदृश्य
ताल हे
वज रहा
पूजी से
पूजी का
रगीन
शाम के लिए

बाप का दर्द

चुपके से कहता
बेटी की जात सहता
जो अपना जिस्म
उघाड़ कर फिरती
शायद कोई बिना
दहेज़ वाला फस जाए
टाट लगी
ज़िन्दगी पर
सलीकेदार
गाउन वाला कस जाए
अपनी आख मूद
उसको
अप्रत्यक्ष रूप से
खुला समर्थन देता
बस यू ही
आजकल मन को मना लेता
खुद से ज्यादा

उसे दिलासा देता
उसका सौन्दर्य
जानती है वह
नहीं जुटा पाएगा
उसका लाचार बाप
उसके लिए दहेज
गर
मर खप के
जुटा भी सका
तो क्या गारंटी
कि
स्टोव की टंकी
नहीं फटेगी
अपने वायुदाब के साथ
एक
बम विस्फोट की तरह

□

तुम एक किताब

तुम एक किताब
जिसमे
मब कुछ सिमटा
अनछुआ-सा

तुम्हारी सुन्दरता
सविधान की
प्रस्तावना
जब भी छूता
तपन से ठडक
पाता

अनुक्रम
दे जाता मुझे
तुम्हारे होठों का
एहसास

उलटता
पलटता
आखरी पन्नों तक
क्लाइमेक्स की
ऊंचाई तक
रोमांचित हो
उद्यत हो जाता

परिशिष्ट में
टंगी रह जाती
तुम
सिर्फ तुम
और
तुम्हारा
ढलता यौवन



मेरी कलम नीलकण्ठ

गण और तत्र

गण में पड़ रहे
हैं घण (घुन)
आतक की घात से
महगाई के भाव से
राजनीति की अनीति से
तत्र क्या कभी
फूक पाएगा मत्र
गण को इनसे
घण (कीटाणु) रहित करने
के लिए

चुनाव

हर बार
नाबालिग के साथ
खुले आम
करता
बलात्कार
वयस्क
मताधिकार के नाम

विश्व-शांति के नाम

सिगरेटों के
लगा कर ढेर
उगलते हो तेज
तम्बाकू का फेन
जिसको पीकर
नशे में खेलते हो
शतरंज का खेल
जलाकर
एक माचिस की तीली
लिखते हो
वैधानिक चेतावनी
विश्व-शांति के नाम
सिगरेट पीना
घातक है
विश्व स्वास्थ्य के लिए

सशयात्मा

राष्ट्रों की सशयात्माए
प्रतिरक्षा के
पेट
खा रहे
शस्त्रो की खुराक
अणु-परमाणु के फल
तदुरुस्ती के लिए
या
मधुमेह की
तैयारी के लिए

सलीब पर टगी

कुछ आकृतिया
नाइट बल्ब की
मद्धिम रोशनी मे
देखता म
समाजशास्त्र
सेक्सोलॉजी
नतिक शास्त्र की
मेज पर
कुहनिया
टिकाये
मेरी आखे
देखती
सामने खिडकी के
भिडे पट

खोखली दरारो से
झाकती
मलीब पर टगी
नारी
जिसकी हथेलियो
पावो मे
कीले नही
दारू की खाली
फूटी बोतले
ठोक दी जाती
झाड़ दी जाती
हवस की राख
बीचो बीच
ऐशट्रे मे
ऐसी विवशता के लिए
ढूढता मै
एक शब्द
समाजशास्त्र
सेक्सोलॉजी
नैतिक शास्त्र
एनसाइक्लोपीडिया मे
पर
न मिल पाता मुझे
वह
एक शब्द
जिसस
ढाल सकू मै
सलीब पर टगी
नारी की
वेदना को
भाषा मे

दगा और औरत

नही होता
दगे का
कोई मजहब
ज़मीर
कुरान
नही होती
दगे की
कोई बिरादरी
बाइबल
गीता
हा उसकी
होती है एक भाषा
खून-खच्चर हत्या
बलात् लूटपाट और बलवा
यह राज़ खुला
कर्फ्यू की रात
उस रात
मस्ज़िद का गुम्बज था बेअज़ान
मोन धारण किये था
मदिर का टकोरा
शात और निष्प्राण

आरती और अज़ान का
सारा का सारा शोर
उमड़ पडा
मेरे शहर की
छातियो पर
मूग दलने को
सडाध के शोर-शराबे
हा दगे की
एक भाषा होती है
खून-खच्चर हत्या
बलात् लूटपाट और बलवा
उसके पीछे होती
लिबलिबे सडास की बदबू
यह राज भी
उन्होने उस शाम जाना था
जब
वहशी ने
शाम ढले
एक गली के
नुक्कड़ पर
चटकती कच्ची कली का
मसलना चाहा बदन
यानी
करना लहुलुहान
पीटता रहा वो
अपने ही जाति के
दगाई दोस्तो को
दगे के रगे हाथो से
उसके दगाई साथियो ने
उसे बहुतेरा समझाया
रोका भी उसे
पर

दगे के डील मे
हवस के भूत का वास था
आगाह भी किया
बेईमान
खुदा के कहर से डर
यह चहकती चिडिया
तेरे ही चाचा की बेटी
अपने ही धर्म
बिरादरी
जाति की
पर उसने
किसी की नही सुनी
न किसी की परवाह की
न रुका
न थमा
वह तो बदहवास
बके ही जा रहा था
हरामजादो...
कुत्तो...
औरत की कोई
जात नही होती
उसकी एक ही
जात होती है
———————
———————
एक भद्दी-सी गाली
औरत के गुप्ताग को
सम्बोधित कर
बकी थी उसने
उससे ही बनती है
वह
औरत जात

उसने सभी
दगाई साथिया को
एक-एक कर
घायल कर दिया
दगे के गरम पानी पर
वासना की भाप
जो हावी थी

दूर
बहुत दूर
यह दृश्य देख रहे थे
भजन चोकी का चोका
न्यारियो की मस्जिद
पिछली गली का नुक्कड
चोराहे पर खुलती
अधखुली खिड़कियो से
झाकती बुर्क की
अधखुली आखे
पास ही खडा था गुरुद्वारा
शर्म से पानी-पानी-सा
चर्च मे मोम की लो
तडफ कर
फरियाद कर रही थी
ओ क्राइस्ट ।
वह नही जानता
वह क्या करने जा रहा हे ?
मस्जिद का गुम्बज
मदिर का टकोरा
यथावत् था अपनी ठौर

एक ही क्षण मे
सारा का सारा
दृश्य ही बदल गया

सब के सब ही उबल पड़े
एक सैलाब की तरह
सबसे आश्चर्य
यह था
उस जुनून मे
सीता सबसे आगे थी
रावण का सहार
करने
फिर एक बार
खुद तैयार-सी
और थी शाहबानो
अपनी पूरी पलटन के साथ
ख़दीजा
नातिया वाली बीबी
फातिमा भुआ
ऐड़िया रगड़ने वाली
धरा के सात फेरो वाली
हाजरा भी थी उनमे
और थी
तसलीमा नसरीन
अपने तेवर बदलते हुए
एनी बिसेन्ट की प्रतिछाया भी
प्रतिबिम्बित
हो रही थी
और
सबसे पीछे
अलग-थलग-सी
चलने मे असमर्थ
फिर भी
लाठी के सहारे
टक_टक_टक_टक
आगे बढ़ रही

मदर टरेसा
उन सभी के
हाथों म न थी
लाठिया
साइकल की चने
रामपुरी चाकू
कटार
छुरे
और न था
बिखरेला स्वर
अन उनकी
आवाज़ मे था
उबलते ख़ून का लावा
एक राह
एक दिशा थी
सूरज के प्रकाश मे
वे सभी टूट पडी
और चीत्कार उठी
पाजी कुत्ते
ओरत का
कोई धर्म
बिरादरी
जात
नही होती
ओरत तो
गीता
कुरान
बाइबल है
सच जो कहे
आरत तो है
इन सब से महान्
उसका दर्जा तो

इनसे भी ऊचा है
औरत की कोख से ही
निकली है दुनिया
तुम हम और वह
यह है
मक्का
मदीना
सफामरवा
आब-ए-ज़मज़म
और है गगा
जो सजाती है
धरा की धरोहर



फतवा

गर चाहते हो
प्रेम काफी
अमन और चैन
तो चुपचाप
कोने मे
बिखरी राख के अगारो पर
अपनी कच्ची-पक्की रोटिया
सकते रहो
अधपकी दाल मे
ढक्कन लगा कर
लहसुन का नही
हीग का बघार दो
निकाल दो
अपने दिमाग से
लाल लाल टमाटरो के
सॉस का स्वाद
भूल जाओ 'फ्राई' होते
आमलेट की महक
चुप रहो
चुपचाप कोने मे पडे रहो
सड़ते रहो
वरना...

तुम्हारे मोज़ो (जुर्राबो)
अन्डरवियरो मे
भर दिया जाएगा
काटा का भूसा
नाक मे भर दी जाएगी
लाल मिर्च की बुकनी
प्रतिक्रिया स्वरूप
चाट-चाट कर भी
ताजिन्दगी साफ न कर पाओगे
कान खोल कर सुन लो।
कभी न साफ कर पाओगे
ज्यादा गिटर-पिटर की तो
हाथीदात की 'सीगी'
घुसेड कर मिटा दी जाएगी तुम्हारी पहचान
जिसके बाद
तुम कभी भी
जन्म न दे पाओगे
अपनी ओकात को

गर चाहते हो
प्रेम काफी
अमन और चैन
तो चुप रहो
चुपचाप
कोने मे
बिखरी राख के अगारो पर
अपनी कच्ची-पक्की रोटिया
सेकते रहो
वरना...

□

तसलीमा नसरीन तुम

नसरीन तुम
उफान हो
धवल-धवल विचारो का
अधकार के खापट पे
भोर के ब्रह्ममुहूर्त का
कट्टरपथियो के लिए
सत्य की शह हो
तुम इन्क़लाब की दस्तक हो
औरत के वजूद के लिए
उठी आवाज़ का
क्योकि तुमने
अपनी कलम से कुरेदा
औरत होकर औरत का दर्द ।
औरत तो आखिर औरत है
चाहे वो सीता, सलमा या मरियम हो
धरती मा आखिर धरती मा है
चाहे वो कुवैत बगलादेश पाकिस्तान
या हो मेरे देश की
तसलीमा नसरीन तुम
पहली पगडडी हो
घने बीहड जगल की
आब-ए-ज़मज़म का चश्मा हो

एक तूफा हो
वह आधड़दानी हाथ हो
जो काट कर कल की काई को
आज के कवल उगा रहो
ऐसी सुगध फला रहो
जिसे टुकड़ो मे
नही बाटा जाएगा
मुहाने पे रुका
वह लावा हो
जो बाध वन पसर जाएगा
और
हो जाएगा समदर म तब्दील
जिसे बाधा न गया
न बाधा जाएगा
जिसे रोका न गया
न रोका जाएगा
जिसे न कद किया गया
न कद किया जाएगा
नसरीन
तुमने जिस
आकात की औलाद को जना है
वह सोकर भी जगेगी
मिट कर भी महकेगी
रोकर भी हसेगी
तुम्हारी कलम की नोक से
चमकेगी उफनेगी
अकुरित करेगी
नवसमाज की कल्पना
तुम वह सुर्ख चिनगारी हो
जो राख मे भी
अपना वजूद
बनाए है

मेरे देश की औरत

सवेरे
पतीली चाय की
दोपहर को
रोटी भाते की
रात को
खुशबू सेज की
बनने-बनाने
खपने-खपाने को ही
जायी
मेरे देश की औरत
बचपन में
जो लीपती गार से
मायके का आगन
जवानी मे
सीचती
तुलसी का थान
बुढ़ापे मं
बुहारती
पालने का पालना
लीपने
सीचने
बुहारने
खपने-खपाने को ही
जायी
मेरे देश की औरत

चारभुजा टाकीज

कटालिया चारभुजा टाकीज
जिसकी
छत मेड बाइ
प्लास्टर ऑफ पेरिस
रामभरोसे जी रहा
बरसात में टपकता
छीकता
चारभुजा टाकीज।

आहिस्ता से हो प्रवेश
हाल में घुप्प अधेरा
दीवारो के पलस्तर
माल्यार्पण कर
करेगे अभिनदन
जेनरेटर पर बज रही
पश्चिमी धुन
अधेरे मे
हाथ-पाव
मारता
चारभुजा टाकीज।

आपके पाव जरूर
चाहेगे गलीचे

पर पंवन्दा के नीचे
आधे आधे फीट के गड्ढे
कटीली झाड़िया
लहुलुहान मुस्कान
फिर भी
टीन क छत पर
उधार म मिला
हसी का फव्वारा
फहराता
चारभुजा टाकीज।

स्टाल से रॉयल वाक्स
फेमिली केबिन तक
'ईजीली प्राप्त कर टिकट
मिडल क्लास की
मैनेजर के सुविधा शुल्क पर
ब्लेक से
स्क्रीन पर नुकीले दाता की
मुस्कान के साथ
उभरता स्लोगन
ब्लेक स भरना जुर्म है
जुर्म की खास स्टाइल
रखता
चारभुजा टाकीज।

खानदानी
ही मेन
ओर शी' वुमेन के
दोर म
चमकते साईन बोर्ड पर
बदलती फिल्मे
'समाज को बदल डाला
तन के गोरे मन के काल

'हम सब चोर है'
'नया जमाना'
आखिर क्यो ?
'जागते रहो'
प्रोढ शिक्षा केन्द्रा मे
नई रोशनी पुराने लोग
हाथ मजबूत करो
गरीबी हटाओ
रोजी, रोटी ओर राम
तिलक, तराजू ओर तलवार
मदिर बनाम मस्जिद
बद करो बाजार
राम तेरी गगा मैली'
कर रहे
'श्री चार सौ बीस'
सपना मे
सब कुछ
सिखाता
चारभुजा टाकीज !

धुधलाये परदे पर
मशीनी हवा से
लहराती गोलाइया
झरने के पानी मे
सुषुप्त वासनाए
छिपकली की आख बन
निगल जाती
उस पूरे दृश्य को
तभी रील हरि-कीर्तन
करने लगती
हो हल्ला
कुर्सिया की खडखड़ाहट

टूटते हत्थे
फटती गद्दिया
मा-बहिन की गालिया
आन्दोलन रैली
नारो का हल्ला
हड़ताल का पचरा
रोटी हो या कचरा
ऐसी ही तालो पर
धड़कता
चारभुजा टाकीज ।

बालकनी से जब
कोई 'कुचमादी'
फेक देता नीचे
चाट के
जूठे दोने
गला साफ करते
टुबर क्यूलोर ीस का खखारा
चूस कर ताजा मुर्गी की टाग
जिसे लेकर निचले दर्शक
छेड़ देते एक जेहाद
समझ कर उसे
गाय सूअर की हड्डी
एक हड्डी के लिए
लाशो के ढेर
लगाता
चारभुजा टाकीज ।

चवन्नी क्लास के
दर्शका को
जब भी
'ऐकी की तलब होती
वे अपनी पेन्टा को

खोल देते दीवारो पर
जबकि दीवारा पर लिखा
देखो देशद्रोही मूत रहा हं
खड़ा खड़ा
मूतता
चारभुजा टाकीज ।

पिछले कुछ दिनो से
सेमी ब्लू फिल्म ही
प्रदर्शित कर रहा
बाहर साईन बोर्ड पर
अश्लील उत्तेजक पोज
परदे पर
गरममसाले के बदले
लाल मिर्च का सूप
कतरन के बहाने
परोसता
जिसे पीते
सिगरेटा के धुआ के साथ
स्कूल के भगोड़िए
जिनम
सास्कृतिक कैसर
फलाता
चारभुजा टाकीज ।

□

हरियल नीम और पिता

हरियल नीम को
मैंने पिता के साथ
रोपा
इस आगन मे
वर्षो पहले
जिसकी छाव तले
प्राण उड़े पिता के
तब से मने सीच-सीच
पाला हे इसको
अपने बेटे के साथ

तपती दोपहरी मे
आज भी छितरी
छाया देता हे
हरियल नीम
आगन मे पिता के
वजूद की तरह

निंबोलिया चूसते
पोते-पोतिया
याद करते
दादा को
नारगी की खट्टी मिट्ठी

गोलिया चूसते हुए
पिता की दी हुई
जेब खर्ची की तरह

आज भी
साझ ढले
जब चढ़ जाता
छाती का दर्द
पड़ के पीछे से
हाले से चलकर
एक हवा का झाका
दे जाता शुभ आशीष
पिता की
शुभकामनाओ की तरह

जब किसी तनाव स
तग
तनावग्रस्त होता बचेन-सा
हरियल नीम की पत्तियो की
सरसराहट
बधा जाती मेरा ढाढ़स
पिता के कधा की तरह

रोज सवेरे
हरियल नीम को
सींचता
म
मेरा बेटा
पोता
पिता के
नमन को

□

गुटखा

मेरी बिटिया
पूछती मुझसे
पापा
गुटखा खाने की चीज़
या
पीने की
मैं
उसे समझाता
खाने की
ग्रीन स्कोलरो के लिए
(जिनको काले चश्मे से भी
सब कुछ हरा-हरा ही दिखाई देता हैं)
जिन पर
महगाई
अकाल
सुकाल
हाथ वाली सरकार
फूलवाली कार
चक्रवाली दरकार का
नही होता असर
वे
गुटखा मलीदा

समझ कर खाते
पीकदानी मे
पीक भी
मालदार थूकते
और
गुटखा पीने की चीज़ है
मेरे लिए
तेरी स्कूल की फीस
ओर फटे मोज़े
रसोई मे
भुआजी को
देख
मैं
खून के घूट पीता
गुटखो पर गुटखे
पीते आर जीते
शराबी की बीवी
जुआरी के बच्चे
बेरोजगार का बाप
टूटी-फूटी हाडी का कुम्हार
दहेज के स्टोव से
जली बेटी की मा
दगे की दहशत से
पगलाये भाई की बहन
भ्रूण परीक्षण के
माइनस प्वाइट पर गर्भपात कराती मोनिया
गट्टर से नाक की हड्डी पर
दलिदर निकालता दलित
वे सभी
गुटखा पीते है
और
गीले आटे का मारा

आटे का काटा कटवाता बजू
शम्पेन के लेबिल लगी
बोतल म
देशी दारू पीता
प्राइवेट स्कूल का
मास्टर
फेमिन के मस्टररोल पर
साक्षरता के आकड़ा से निकल
अटका अगूठा
जक और चक के
अभाव म
हारने वाला हरिया
वे भी सभी
गुटखा पीते हे
और
किन-किन का
नाम गिनाऊ
वे मासूम हाथ
छोड़ पोथी-पाती
थामे जीवन का भार
कमठे
चाय की दुकान
ठेके पर
मसाले की फैक्ट्री म
काम करता
स्कूल की स्लट
वे नन्ही चिमटिया
सख्त होती पोरो का दर्द
मिर्चो के टुचके
तोड़ते टिच्चुरिए
अथवा
सवेरे फेरी पर निकली

रद्दी प्लास्टिक के लिए
कलुओ की फाज
या
वे जो झपट पड़ते
मावे की कचारी के
मीठे रस के जूठे दोनो पर
गुटखा पीने की सब्र की
हद से गुजरते हुए
अत मे
गुटखा पीती
वह न्याय की देवी
जिसकी मुदी आखे
देखती नगापन
पेशी के बिस्तर पर टगते
चद सिक्को के लिए
दिन के उजाल का झुठलाते
काले कोट
सब कुछ
इधर-उधर
यहा-वहा
गुटखा पीते
लेकिन
वे ग्रीन स्कोलर
गुटखा
मलीदा समझकर खाते
खरड़खप_खरडखप

इससे पहले कि
म बिटिया का
गुटखा पीने की बजाय
गुटखा उगलने का
गुणनखण्ड समझाता

वह सो चुकी थी
मगर
उसके थे पेशानी पर
परेशानियों के
निशान
शायद
गुटखा
हलक के नीचे
उतरने का प्रयास कर रहा था
पर वह
निगल नहीं पा रही थी

□

आगन

आगन
नही मेरे कमरे के आगे
फिर भी
रोज सवेरे
दहलीज लाघ
परात पर टिकटिकाती
फुदफुदाती
चहचहाती
चली आती चिड़िया
चुटकी-चुटकी लोई से
चूट जाती चुगा
परीडै की
लबरेज़ कूडी के
छलकते पानी से
भर लेती चोच
जब कभी
धूप का
एक नन्हा-सा टुकड़ा
अर्घ्य देने लगता
नाडे को
फेला कर पख
नहाने लगती
वह उसमे
कितना खुशनसीब मे
धूप चिड़िया
हवा, बादल पानी
मय्यसर तो हे मुझको
जबकि
आगन
नही मेरे कमरे के आगे

मेरी कलम नीलकण्ठ

जीवन के समदर म
एहसास की नौकाआ का साथ
जोड़ता
जीवट सघर्ष
आर
जूझता
सहलाता
दु ख
सताप

महसूसता
असताप
अभाव
वदना

सवेदना की मथनी
करती मथन
इन्ही मे से
निकलता
भावा का फेन
जिन्ह शब्दा की
छोटी-छोटी अगुलियो से
सहेज कर रखता
अपने अतस्पट पर

धीरे-धीरे उगलती
मेरी कलम

तब
नीले अक्स के रूप मे
जन्म लेती मेरी कविता

रात के कार्बन पेपर पर
कोरा सफेद
एक कागज
जिस पर
फुदकते
टकण के शब्द
जन्म और मृत्यु को
पाटते
पद चिह्न
सुख और दु ख के
घिसते
कटते
फटते
कम होते
दिन